समाज विकासमाला

शेख सादी

रस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : १०१

शेख सादी

परिचय और शिक्षाप्रद कहानियां

लेखक
शिवनाथसिंह शांडिल्य

सम्पादक
यशपाल जैन

१९५९
सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : १९५९
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
सुरेंद्र प्रिंटर्स प्रा० लि०,
डिप्टी गंज, दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देन की कृपा करें।

—मंत्री

पाठकों से

शेख सादी का नाम बहुत-से पाठकों ने सुना होगा। वह फारसी के ऊंचे दर्जे के लेखक थे। उनकी सबसे बड़ी खूबी यह है कि उन्होंने जो कुछ लिखा है, वह विचारों को अच्छी खुराक़ देता है।

इस पुस्तक में शेख सादी का थोड़ा-सा परिचय, उनकी छोटी-छोटी कहानियां और उनके कुछ चुने हुए वचन दिये गये हैं। 'गुलिस्तां' और 'बोस्तां' उनके दो मशहूर ग्रंथ हैं। कहानियां और वचन उन्हींमें से छांट-कर दिये गये हैं।

यह सामग्री इतनी बढ़िया है कि जो भी इसे पढ़ेगा, उसीको लाभ होगा। हर कहानी में सीख है और हर वचन में ज्ञान भरा हुआ है। समुद्र में जितना गहरा गोता लगाते हैं, उतने ही मूल्यवान रत्न हाथ लगते हैं। यही बात इस पुस्तक के साथ है।

—संपादक

शेख सादी

: १ :

शेख सादी कौन थे ?

शेख सादी दुनिया के ऊंचे दर्जे के लोगों में से थे। उनका जन्म फारस के शीराज नामक शहर में सन् ११७२ ई० में हुआ था। उनका असली नाम था मलसहुद्दीन। 'सादी' नाम और शेख तो उनके कुल की मर्यादा के चिह्न थे। उनके पिता शेख अब्दुल्ला बड़े विद्याप्रेमी और धार्मिक स्वभाव के थे। शीराज में उनका बड़ा मान था और उस जमाने का बादशाह साद-बिन-जंगी उनका बड़ा आदर करता था। वह अक्सर दरबार में जाते रहते थे। एक दिन वह सादी को भी साथ ले गये। बादशाह ने बड़े प्यार से सादी से उनकी उम्र पूछी तो सादी ने बड़ी नम्रता से जवाब दिया, "जहांपनाह की शानदार हुकूमत के जमाने से बारह साल छोटा हूं।"

सादी के इस जवाब से बादशाह बड़ा खुश हुआ और उनके पिता शेख अब्दुल्ला से कहा, "यह बालक बड़ा होनहार है। इसकी पढ़ाई-लिखाई वगैरा का पूरा ख्याल रखना चाहिए। खुदा ने चाहा तो यह एक दिन

फारस का नाम ऊंचा करेगा।"

बादशाह ने बालक सादी के बारे में जो कहा था वह सही साबित हुआ। सादी ने फारसी-साहित्य को अपनी देन से तथा जीवन की ऊंचाई से जो नाम और मान पाया वह बहुत कम लोगों को नसीब हुआ होगा। उन दिनों शहर शीराज विद्या और कला का केन्द्र बना हुआ था। वहां कई विद्यालय थे, जिनमें बहुत-से देशों के विद्यार्थी शिक्षा पाने के लिए जाया करते थे। परंतु एक बड़ी कठिनाई थी और वह यह कि बादशाह साद-बिन-जंगी को लड़ाई का बड़ा शौक था। वह अक्सर दूसरे देशों पर चढ़ाई करता रहता था। उसके पीठ-पीछे देश में उपद्रव खड़े हो जाया करते थे, जिसकी वजह से शिक्षा-संस्थाओं में पढ़ाई ठीक नहीं चलती थी।

सादी शीराज के मदरस-ए-अजदिया में शिक्षा पा रहे थे। लेकिन जब उन्होंने देखा कि आएदिन की इस मार-काट के कारण पढ़ाई ठीक नहीं चलती तो उन्होंने इस मदरसे को छोड़ दिया।

ईराक देश के बगदाद शहर की उन दिनों अपनी शान थी। सादी वहां के मदरस-ए-निजामिया में दाखिल होने के लिए बगदाद की ओर चले। किन्तु उन दिनों बगदाद का रास्ता बड़ा ही कठिन था। चोर-डाकुओं का डर रहता था। अकेले आदमी को सफर करने की हिम्मत न होती थी। लोग बड़े-बड़े काफिले बनाकर चलते थे। सादी भी एक ऐसे ही काफिले के साथ हो लिये। लेकिन रास्ते में बीमार हो गये और काफिले का

साथ छूट गया। वह एक गांव में ठहर गये। जब ठीक होगये तो आगे बढ़े थोड़ी ही दूर निकले होंगे कि उन्हें डाकू मिल गये। किंतु शेख सादी घबराये नहीं और

"कुरान शरीफ की बेइज्जती न होने पावे"

उन्होंने डाकुओं से कहा, "मैं गरीब लड़का हूं। तालीम हासिल करने के लिए बगदाद जा रहा हूं। मेरे पास सिवा कपड़ों के और कुरानशरीफ के और कुछ नहीं है। तुम चाहो तो इन चीजों को खुशी से ले सकते हो, लेकिन एक बात का ख्याल रहे कि कुरानशरीफ की बेइज्जती न होने पावे। इस मजहबी किताब को तुम हमेशा छाती से लगाये रखना।"

डाकुओं पर इस बात का बड़ा प्रभाव पड़ा और

उन्होंने शेख सादी को न केवल बिना हानि पहुंचाये छोड़ दिया, बल्कि सुरक्षा के विचार से दो डाकू बहुत दूर तक उनके साथ गये।

शेख सादी सही सलामत बगदाद पहुंच गये और वहां मदरस-ए-निजामिया में दाखिला ले लिया। उन्हें वजीफ़ा भी मिल गया और उनकी गुजर-बसर आराम से होने लगी।

शेख सादी करीब दस साल तक इस मदरसे में पढ़े और उन्होंने धर्म-शास्त्र, गणित, विज्ञान, भूगोल, इतिहास आदि विषय बारीकी से पढ़े और बड़ी अच्छी तरह से 'अल्लामा' की डिग्री प्राप्त करली। जब पढ़ाई समाप्त करके वह बाहर निकले तो उन्होंने सोचा कि शिक्षा द्वारा जो ज्ञान पाया है, वह बिना घूमने-घामने के अधकचरा ही रहेगा। सो वह फारस न जाकर यात्रा पर निकल पड़े और तीस-चालीस साल तक बराबर देश-देशांतरों में घूमते रहे। उनके ग्रंथों में इन्हीं यात्राओं के अनुभव भरे पड़े हैं।

इस लंबे अर्से में उन्होंने ईरान, ईराक़, कुरदिस्तान, एशिया, कोचक, स्याम, लेबनान, फिलिस्तीन, अरब, मिस्र, तुर्किस्तान, अफ़गानिस्तान आदि देशों की यात्राएं कई-कई बार कीं। हिंदुस्तान भी आये थे, लेकिन यहां ज्यादा दिन नहीं रहे।

शेख सादी हमेशा पैदल सफ़र किया करते थे और अपने साथ सिवा मामूली कपड़ों और पुस्तकों के और कोई चीज नहीं रखते थे। वह जहां जाते, वहां महीनों

रहा करते थे । भले लोगों की संगति में बैठते और उनसे कुछ-न-कुछ सीखने की कोशिश करते थे ।

शेख सादी का देशाटन केवल अपनी ज्ञान-प्राप्ति और मनोरंजन के लिए नहीं था, बल्कि वह जहां कहीं जाते, लोगों को सदाचार, धर्म, नीति और अच्छे-अच्छे कर्मों शिक्षा देते थे । जहां तक उनसे बनता था, आम लोगों की सेवा करने का पूरा प्रयत्न करते थे ।

शेख सादी बहुत दिनों तक यात्रा करते रहे और बगदाद नहीं गये । जब उनकी उम्र कोई ७० साल की हुई और बुढ़ापे के कारण उनमें पहले जैसी ताकत न रही तो उन्हें जन्म-भूमि की याद आई । फारस में अब बड़ा हेरफेर हो चुका था । बादशाह साद-बिन-जंगी की मौत हो गई थी और उसका बेटा अताबक-अबु-बकर गद्दी पर विराजमान था । वह बड़ा ही न्यायी और दयालु शासक था । अब फारस में पहले जैसे उपद्रव नहीं होते थे और लोग शांति का जीवन बिता रहे थे । इसलिए शेख़ सादी फारस लौट आये । बादशाह और प्रजा ने उनका बड़ाआदर-सत्कार किया और वह शीराज में बैठकर साहित्य की साधना करने लगे ।

कुछ दिन बाद वह फिर एक बार बगदाद गये । वहां की दशा देखकर उन्हें बड़ा दुःख हुआ । हलाकू खां ने बगदाद को बरबाद कर डाला था और पहले जैसी शान बगदाद की नहीं थी । इस समय वहां हलाकू खां के बेटे अलका खां की हुकूमत थी । एक दिन उसका मंत्री अल्लाउद्दीन खां शेख सादी से मिलने गया और उस-

पर उनका ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह शेख सादी का भक्त बन गया और जबतक वह बगदाद में रहे, बराबर उनकी सेवा करता रहा। वह शीराज़ लौट आये तब भी उसकी तरफ से सहायता जारी रही। एक बार अलाउद्दीन खां ने पचास हजार दीनार भिजवाये। इस धन से शेख सादी ने एक मदरसा और एक मुसाफिर-खाना बनवाया। इसी मुसाफिर-खाने में वह जीवन के बाकी के दिनों में रहे और सौ साल से ज्यादा उम्र पाकर इसी मुसाफिर-खाने में उनकी मृत्यु हुई।

शेख सादी की लिखी हुई कोई सोलह पुस्तकें हैं, जिनमें 'गुलिस्तां' और 'बोस्तां' मुख्य हैं। 'गुलिस्तां' गद्य में और 'बोस्तां' पद्य में है। इन्हीं दो पुस्तकों में से आगे उनकी कुछ कहानियां तथा सीख की बातें दी जा रही हैं।

: २ :

कहानियां

१

एक बादशाह बड़ा इंसाफ-पसंद था। उसकी पोशाक फटी हुई थी। उसमें दो तरफ थेगली लगी हुई थी। किसीने उससे कहा, "चीन के कीमती रेशम की एक अच्छी पोशाक सिलवाकर हजूर क्यों नहीं पहनते ?"

बादशाह ने जवाब दिया, "इतने ही कपड़ों में आराम है और शरीर ढंक जाता है। मैं अपने मुल्क की

प्रजा से 'कर' इसलिए नहीं लेता कि अपनी या अपने ताज और तख्त की शान बढ़ाने के लिए उसे खर्च करूं। सरकारी खजाना मेरेलिए नहीं है कि मैं उसे अपने ऐशोआराम की चीजों में खर्च करूं। मेरेलिए देश और प्रजा की भलाई की सबसे ज्यादा अहमियत है।"

२

बादशाह अब्दुल अजीज की अंगूठी पर एक कीमती नगीना था। वह नगीना रात में भी दिन की रोशनी की तरह चमकता था।

"अंगूठी को बेचकर जो दाम मिलें, फ़कीरों और कंगालों में बांट दो।"

दुर्भाग्य से एक साल अकाल पड़ा। बादशाह ने वह अंगूठी अपने हाथ से उतारी और अपने नौकरों से कहा,

"इस नगीने को बेच दो। जो दाम मिलें, फकीरों और कंगालों में बांट दो।" नौकरों ने वैसा ही किया।

एक आदमी ने बादशाह से पूछा, "यह आपने क्या किया? अब ऐसा नगीना कहां मिलेगा?"

बादशाह की आंखों से आंसू बहने लगे। उसने कहा, "मेरी अंगूठी बिना नगीने के ही अच्छी है। प्रजा का दुःख-दर्द पहले देखना चाहिए। आदमी वह अच्छा है, जो दूसरे लोगों के आराम को अपने आराम से कहीं ज्यादा पसन्द करे। अगर बादशाह अपने सिंहासन पर चैन से सोने लगे तो फिर फकीर किस तरह आराम कर सकेंगे?"

३

एक बार दमिश्क शहर में बड़ा अकाल पड़ा। आसमान से एक बूँद पानी न गिरा। खेत सूख गये। नदियां खुश्क हो गईं। पानी बस अनाथ बच्चों की आंखों में रह गया। किसी खिड़की से अगर धुआं निकलता था तो वह किसी असहाय और दुखी औरत की आह का धुआं होता था। पेड़ फकीरों की भांति कंगाल हो गये। ऐसी हालत हो गई कि न तो पहाड़ों पर सब्जी दिखाई देती थी, न बागों में हरियाली। खेत टिड्डियों ने चाट डाले थे। आदमियों ने टिड्डियों को साफ कर डाला था।

इन्हीं दिनों मेरा एक दोस्त मुझसे मिलने आया।

उसकी हड्डियों पर बस खाल बाकी रह गई थी। उसे देखकर मुझे बड़ा अचरज हुआ, क्योंकि वह अमीर आदमी था। मैंने उससे पूछा, "कहिये, क्या हाल है?"

उसने जवाब दिया, "क्या आपको दुनिया का हाल मालूम नहीं है? कितनी मुसीबतें और आफतें आई हुई हैं। पानी न बरसने से बुरी हालत हो गई है।"

मैंने कहा, "यह तो ठीक है, मगर तुम्हें इस सबसे क्या! तुम्हारे पास तो बड़ी दौलत थी!"

वह फिर कहने लगा, "यह सच है। मगर वह इंसान नहीं है, जो दूसरों को दुखी देखकर खुश हो। जब मैं देखता हूं कि किसी आदमी ने फाका किया है, तब मेरे मुंह में टुकड़ा नहीं उतरता। उस तन्दुरुस्त आदमी का सुख गायब हो जाता है, जिसके पास बीमार बैठा हो।"

४

एक बादशाह के बदन में भयानक फोड़ा निकल आया। बादशाह उसकी वजह से बहुत कमजोर हो गया। तन्दुरुस्त लोगों को देख-देखकर वह जलने लगा। एक दिन एक दरबारी ने बादशाह से कहा, "हजूर, इस शहर में एक ऊंचे दर्जे का आदमी रहता है। जो उनके पास जाता है, उसकी मुराद जरूर पूरी हो जाती है। उन्हें बुलाइये। बीमारी से आपका जरूर पीछा छूट जायगा।"

बादशाह ने उस आदमी को बुलाया। वह आये। बादशाह ने कहा, "ऐ बुजुर्ग, मेरे लिए दुआ कीजिये।

मैं इस बीमारी में फंसा हुआ हूं।"

आदमी बोला, "ऐ बादशाह, जरा सोचकर तो देखो कि मेरी दुआ ऐसी हालत में क्या कबूल हो सकती है जब कि तुम्हारे जेलखानों में बेगुनाह कैदी बंद पड़े हैं? जब तुमने प्रजा पर दया नहीं की, तो तुम्हें सुख और आराम कैसे मिल सकता है? पहले अपने कसूरों के लिए माफी मांगो, इसके बाद दुआ की अरदास करना।"

बादशाह बहुत लज्जित हुआ। उसने आज्ञा दी कि कैदियों को छोड़ दो। कैदी छूट गये तो उसने बादशाह के लिए दुआ मांगी—"ऐ खुदा, तूने हुक्म न मानने के कसूर में इसे रोग में फंसाया था, अब इसने तोबा करली है और अपने गुनाहों के लिए माफी मांगता है। अब तू इसे रोग से छुटकारा दे दे।"

अभी वह हाथ उठाये ही हुए थे कि बादशाह अपने बिस्तर से उठ बैठा, बीमारी दूर हो गई।

बादशाह ने आज्ञा दी कि उस आदमी को सिर से पांव तक मोतियों से लाद दिया जाय।

उस आदमी ने कहा, "ऐ बादशाह, अब बुराई की तरफ फिर मत झुकना, कहीं ऐसा न हो कि फोड़ा फिर निकल आवे।"

५

एक बादशाह अपने एक नौकर के साथ जहाज में बैठा हुआ था। नौकर ने इससे पहले कभी समुद्र

और जहाज नहीं देखा था। जिस समय जहाज समुद्र में चलने लगा, वह मारे डर के थर-थर कांपने लगा।

"हुक्म हो तो मैं इसे चुप कर दूं।"

बादशाह यह देखकर बहुत परेशान हुआ, पर नौकर का डर दूर करने का उसे कोई उपाय न सूझा।

उस जहाज में एक बहुत ही अकलमंद आदमी भी था। उसने बादशाह से कहा कि हुक्म हो तो मैं इसे अभी चुप कर दूं। बादशाह ने कहा--बड़ी मेहरबानी होगी।

उस आदमी ने डरपोक नौकर को समुद्र में फैंक

दिया। जब नौकर कई गोते खा चुका तो उसने उसे दोनों हाथों से ऊपर खींचकर जहाज के एक तख्ते पर लटका दिया। पानी के बाहर आकर नौकर जहाज के एक कोने में चुपचाप बैठ गया।

बादशाह को बड़ा अचंभा हुआ। उसने पूछा कि इसमें क्या हिकमत थी? अकलमंद आदमी ने कहा, "पहले इसने न तो कभी डूबने की तकलीफ़ भुगती थी और न जहाज की हिफाजत की कीमत जानता था। आराम की कीमत वही आदमी जानता है जो मुसीबत में पड़ चुका है।"

६

एक बार एक पहुंचा हुआ फकीर बगदाद शहर में आया। बादशाह को उसके आने की खबर मिली तो उसने फकीर को बुलवाकर कहा, "मेरी तरक्की के लिए दुआ करो।"

फकीर ने दुआ की—"ऐ खुदाबंदताला, तू इसकी जान ले ले।"

बादशाह ने कहा, "ऐ खुदा, यह कैसी दुआ है!"

फ़कीर ने जवाब दिया, "यह दुआ तेरी तरक्की के लिए और सब मुसलमानों की भलाई के लिए है।"

बादशाह ने पूछा, "किस तरह?"

फकीर ने जवाब दिया, "अगर तू मर जायगा तो प्रजा तेरे जुल्मों से बच जायगी और तू पाप से छूट जायगा।

७

एक जालिम बादशाह ने एक साधु से पूछा, "सबसे अच्छी इबादत कौन-सी है ?"

साधु ने जवाब दिया, "तुम्हारे लिए दोपहर को सोना सबसे अच्छी इबादत है, जिससे थोड़ी देर के लिए तो प्रजा तुम्हारे जुल्म से बची रहे।"

मैंने एक जालिम आदमी को दोपहर को सोते हुए देखा तो मैंने कहा, "यह आदमी पाप का पुतला है। अच्छा है कि यह सो रहा है।"

जिस आदमी का सोना उसके जागने से अच्छा है, उस आदमी के मरने में ही भलाई है।"

८

एक बार बादशाह नौशेरवां के लिए जंगल में खाना तैयार हो रहा था। संयोग से उस समय नमक नहीं था। नौकर को नमक लाने के लिए गांव भेजा। नौशेरवां ने कहा, "नमक दाम देकर लाना, जिससे बुरी प्रथा न पड़े और गांव बरबाद होने से बचे रहें।"

लोगों ने कहा, "इस जरा-सी बात से क्या नुकसान हो सकता है ?"

नौशेरवां ने जवाब दिया, "इस जहान में पहले जुल्म की जड़ जरा-सी ही थी। जो यहां आया, वह उसको थोड़ा-थोड़ा बढ़ाता गया। यहांतक कि अब वह बहुत बड़ी हो गई है। अगर प्रजा के बाग से बादशाह एक सेब तोड़ ले तो उसके नौकर सारे पेड़ों को ही जड़

से उखाड़ डालेंगे ।"

९

दो भाई थे । एक राजा की नौकरी कर रहा था, दूसरा अपनी मेहनत से कमाकर रोटी खाता था। बादशाह की नौकरी करनेवाला भाई बहुत मालदार था । एक बार उसने अपने गरीब भाई से कहा, "भाई, तुम नौकरी क्यों नहीं कर लेते, जिससे मेहनत की तक-लीफ से छुटकारा पा जाओ ?"

गरीब भाई ने जवाब दिया, "तुम मेहनत क्यों नहीं करते, जिससे चाकरी की बेइज्जती से बच जाओ ।"

१०

एक साधु नंगे सिर और नंगे पांव मुसाफिरों के काफिले के साथ आया और मेरे साथ रेगिस्तान में चलने लगा । मैंने देखा कि उसके पास एक पैसा भी नहीं है और वह मजे में चल रहा है । कह रहा था, "मैं न तो ऊंट पर सवार हूं और न ऊंट की तरह बोझ से लदा हूं । न तो मैं लोगों का मालिक हूं, न और किसी राजा का गुलाम हूं । मुझे कुछ भी फिक्र नहीं है । मैं सब्र से रहता हूं और चैन से जिंदगी गुजारता हूं ।"

एक ऊंटसवार अमीर ने उससे कहा, "हे साधु, तुम कहां जा रहे हो । लौट जाओ, नहीं तो तकलीफ से मर जाओगे ।"

साधु ने उसकी बात सुनी-अनसुनी करदी और रेगिस्तान में एक-एक कदम रखकर आगे बढ़ने लगा ।

कुछ दूर जाने पर ऊंट सवार-अमीर खुद ही मौत के मुंह में चला गया। तब वह साधु उसके सिरहाने आकर बोला, "ऐ भाई, मैं तो तकलीफ से नहीं मरा, तुम्हीं अपने ऊंट पर चल बसे!"

११

एक आदमी एक बीमार के सिरहाने रातभर रोया। जब दिन निकला तब रोनेवाला तो मर गया, लेकिन बीमार अच्छा हो गया।

एक पीर ने अपने मुरीद से कहा, "मैं लोगों से बहुत परेशान हूं। वे रोज मुझे देखने आते हैं, जिससे मेरा वक्त बरबाद होता है।"

मुरीद ने जवाब दिया, "इन लोगों में जो गरीब हैं, उन्हें कुछ कर्ज दे दो और जो अमीर है, उनसे मांगना शुरू कर दो। बस, फिर कोई तुम्हें परेशान न करेगा।"

१२

बगदाद शहर में एक मरतबा राज-दरबार के एक पर्दे और झंडे में बड़ा झगड़ा हुआ। झंडे ने पर्दे से कहा, "हम दोनों एक ही मालिक के चाकर हैं और बादशाह के दरबार के गुलाम हैं। पर मुझे जरा-सी देर के लिए भी आराम नहीं मिलता। वक्त-बेवक्त हमेशा मैं चलता रहता हूं, और रास्ते की धूल और थकावट से मुझे बहुत तकलीफ होती है। पर तुम राज-दरबार के दरवाजे पर चैन से जिंदगी गुजारते हो, तुम्हें किसी तरह भी कोई

तकलीफ नहीं उठानी पड़ती। इसकी क्या वजह है ?"

पर्दे ने जवाब दिया, "मैं चौखट पर सिर रखता हूं, तुम्हारी तरह आसमान की तरफ सिर नहीं उठाता।"

जो कोई घमंड से अपनी गर्दन उठाता है, वह अपना ही सिर पटकता है।

१३

एक बार फारस के बादशाह ने पैगम्बर मुहम्मद के पास एक हकीम को भेजा। वह साल भर अरब में रहा लेकिन किसीने भी उससे इलाज करने को नहीं कहा।

एक दिन उसने पैगम्बर के पास आकर शिकायत की, "मैं आपके चेलों का इलाज करने के लिए यहां भेजा गया था; पर अबतक किसीने मुझसे इलाज नहीं कराया, जिससे मैं अपना फर्ज पूरा कर पाता।"

पैगम्बर ने जवाब दिया, "इन लोगों की आदत है कि जबतक भूख से लाचार न हों तबतक कुछ नहीं खाते और जब थोड़ी भूख बाकी रहती है तभी भोजन से हाथ खींच लेते हैं।"

हकीमने कहा, "यही तन्दुरुस्ती की वजह है।"

१४

किसीने एक मरतबा दान के लिए मशहूर हातिम से पूछा, "तुमने कहीं अपने से ज्यादा अपनी इज्जत रखनेवाला आदमी देखा है ?"

उसने कहा, "हां, एक मरतबा मैं एक जरूरी काम

से जंगल की तरफ जा निकला। वहां मैंने एक लकड़हारे को लकड़ी काटते हुए देखा। मैंने उससे कहा, "मुल्क के बड़े-बड़े लोग हातिम के यहां खाना खाते हैं। तू भी उसका मेहमान क्यों नहीं हो जाता है?' लकड़हारे ने

हातिम और लकड़हारा

कहा, 'जो इन्सान अपनी मेहनत से रोटी खाता है, उसे हातिम का अहसान उठाने की जरूरत नहीं।' अगर इंसाफ की निगाह से देखा जाय तो वह आदमी मुझसे कहीं ज्यादा इज्जतदार था।"

१५

मैं कभी मुसीबतों से नहीं घबराया। लेकिन एक मरतबा जब मेरे पास न तो जूते थे और न जूते खरीदने

के लिए पैसे तो मुझे बड़ा दुख हुआ। मैं एक मस्जिद में आकर लेट गया। वहां मैंने एक आदमी को देखा जिसके पैर नहीं हैं। मैंने खुदाबंदताला का शुक्रिया अदा किया या खुदा, जूते न सही, तूने मुझे पैर तो दिये।

१६

एक नगर में एक बूढ़े आदमी के यहां मैं ठहरा हुआ था। उसके पास बहुत दौलत थी। एक खूबसूरत लड़का भी था। एक रात को वह बूढ़ा कहने लगा, "सारी जिन्दगी में मेरे बस एक यही लड़का हुआ है। इस घाटी में एक पेड़ है। उसके पास लोग वरदान मांगने जाया करते हैं। उस पेड़ के नीचे रात-रातभर मैंने खुदा से दरख्वास्त की थी। आखिर उसने मुझे एक बेटा दे दिया।"

मैंने सुना कि वही लड़का अपने दोस्तों से कह रहा है, "क्या ही अच्छा हो कि मुझे खुदा का पता लग जाय। मैं उससे दरख्वास्त करूं कि मेरा बाप जल्द मर जाय।"

एक तरफ बाप तो यह कहता हुआ खुश हो रहा था कि मेरा बेटा बड़ा होशियार है, दूसरी तरफ बेटा गाली दे रहा था कि मेरा बाप बेवकूफ है।

बेटे, बहुत दिन पीछे तुम्हें भी अपने बाप की कब्र के रास्ते जाना होगा। अपने बाप के साथ तुमने क्या भलाई की है कि जो तुम अपने बेटे से भलाई की उम्मीद करो?

१७

मैंने अफ्रीका में एक मुदर्रिस को देखा, जो बड़ा ही गुस्सैल और कड़वी जबान का था। उसके सामने कोई लड़का न हँस सकता था, न बात कर सकता था। कभी किसीके तमाचा मार देता तो कभी किसीको पिंडली शिकजे में खींच देता। जब लोगों को उसकी बुरी आदत का पता लगा तो उसको निकाल बाहर किया और उसकी जगह दूसरा आदमी रख लिया, जो बहुत ही नेक था और जरूरत से ज्यादा बात न करता था। सब लोग उससे खुश रहते थे।

बच्चों ने जब उसकी ऐसी आदत देखी तो सब शैतान हो गये, पढ़ना-लिखना छोड़ दिया, खेल-कूद में मस्त रहने लगे।

दो हफ्ते बाद जब मैं फिर मस्जिद में गया तो मैंने देखा कि लोग पहले मुदर्रिस को राजी करके वापस ले आये हैं। मुझे बड़ा रंज हुआ। मैंने पूछा कि इस शैतान को वापस क्यों बुला लिया ?

एक हंसमुख बूढ़ा मेरी बात सुनकर हंसा और कहने लगा, "एक बादशाह ने अपने लड़के को पढ़ने भेजा और चांदी की एक तख्ती उसकी बगलमें दे दी। उस तख्ती पर सोने के हरफों में लिख दिया, "गुरु की मार मां-बाप के प्यार से अच्छी है।"

१८

एक आदमी की आंखें दुखती थीं। वह घोड़ों के

हकीम के पास जाकर बोला कि मेरी दवा करो। हकीम ने उसकी आंखों में वही दवा लगा दी, जो वह जानवरों की आंखों में लगाता था। वह बेचारा अंधा हो गया। जब लोग हाकिम के सामने यह मामला लेकर गये तो हाकिम ने कहा, "हकीम का कोई कसूर नहीं है। अगर यह आदमी जानवर न होता तो घोड़े के हकीम के पास न जाता !"

: १९ :

एक अमीर का लड़का अपने बाप की कब्र पर बैठा हुआ एक फ़कीर के लड़के से कह रहा था, "मेरे बाप की कब्र का संदूक पत्थर का है। उसपर लिखी इबारत रंगीन है। उसके लिए संगमरमर का फर्श बिछाया गया है। तेरे बाप की कब्र में क्या है ? बस, एक-दो ईटें रखकर एक मुट्ठी मिट्टी डाल दी गई है !"

यह सुनकर फ़कीर के लड़के ने कहा, "जबतक तुम्हारा बाप इन भारी पत्थरों के नीचे से निकलेगा तब तक मेरा बाप स्वर्ग में पहुंच चुका होगा।"

मजहबी किताबों में लिखा है गरीब के लिए मौत आराम है। उसके पास ऐसा कुछ नहीं होता कि उसे छोड़ते हुए वह रंज करे।

२०

दौलत जिंदगी के सुख के लिए है। जिंदगी दौलत इकट्ठा करने के लिए नहीं है।

किसीने एक अक्लमंद आदमी से पूछा, "खुश-

किस्मत कौन है और अभागा कौन ?"

अक्लमंद ने जवाब दिया, "खुशकिस्मत वह, जिसने बोया और खाया। अभागा वह, जो मर गया और छोड़ गया।"

२१

दो आदमी बेकार ही मेहनत करके दुख उठाते हैं। एक तो वह जो दौलत इकट्ठी करता है, मगर न खाता है, न पहनता है। दूसरा वह जो इल्म हासिल करता है; लेकिन उसके मुताबिक काम नहीं करता। तुम चाहे जितना इल्म हासिल कर लो, लेकिन अगर तुम उसके मुताबिक काम नहीं करते तो तुम मूरख हो। तुम किताबों के बोझ से लदे हुए चौपाये के मानिंद हो। बेवकूफ जानवर क्या जाने कि उस पर किताबें लदी हैं या ईंधन !

२२

तुकला जंगी नामक बादशाह के राज में कोई दुखी न था। प्रजा को सुख पहुंचाने में वह दूसरे बादशाहों से भी बाजी ले गया था। एक दिन वह एक फकीर से कहने लगा, "मेरी उमर अकारथ गई। जब धन-दौलत कुछ भी साथ नहीं जाता तो मेरे ख्याल में फकीर सबसे ज्यादा दौलतमंद है, क्योंकि वह एक खास दौलत अपने साथ ले जाता है। मैं भी यही चाहता हूं कि अब एक कोने में बैठ जाऊं और खुदा का नाम लिया करूं, जिस-

से अपनी रही-सही उम्र में कुछ हासिल कर सकूं और यह चार दिन की जिंदगी बेकार न जाने पावे।"

फकीर ने कहा, "ऐ तुकला, तेरा ख्याल बेमानी है। प्रजा की खिदमत करना भी सबसे बड़ी फकीरी है। माला आसन और गुदड़ी से कुछ नहीं होता। तू अगर गद्दी पर बैठकर सचाई और खुदा की भक्ति के रास्ते पर चल पड़े, बेकार की बातों से जबान को रोक ले, तो यही बहुत है। दावे से कुछ नहीं होता, अमल सबसे उम्दा चीज है। पहले के बड़े लोग सच्चे और भक्त होते थे। वे हमेशा चोगे के नीचे गुदड़ी पहनते थे।"

२३

एक पहलवान बड़ा गरीब था। न दिन को रोटी का सहारा, न शाम के खाने का। पेट के लिए पीठ पर मिट्टी लादता था। मेहनत करते-करते बेचारा थक जाता और हमेशा अपनी तकदीर कोसा करता।

जब लोगों का सुख-चैन से देखता था, तो उसे बड़ा रंज होता। कहता, "यह मुझपर कैसा जुल्म है कि लोग तो शहद उड़ाते हैं, मुझे रोटी के साथ साग भी नहीं मिलता। अच्छा इंसाफ है! मैं कपड़ों के लिए भटकता हूं और लोग बढ़िया पोशाक पहने फिरते हैं।"

एक दिन वह कहीं जमीन खोद रहा था। अचानक एक चेहरे का ढांचा जमीन में से निकला। उसके मोती-से दांत झड़ चुके थे। लेकिन वह बेजीभ का मुखड़ा बहुत-सी भेद की बातें बता रहा था, 'ऐ इंसान, मायूसी

की हालत में भी खुश रह चाहे दिल का खून पियो या मिठाई खाओ, मिट्टी में मिलने के बाद तुम्हारे मुँह को
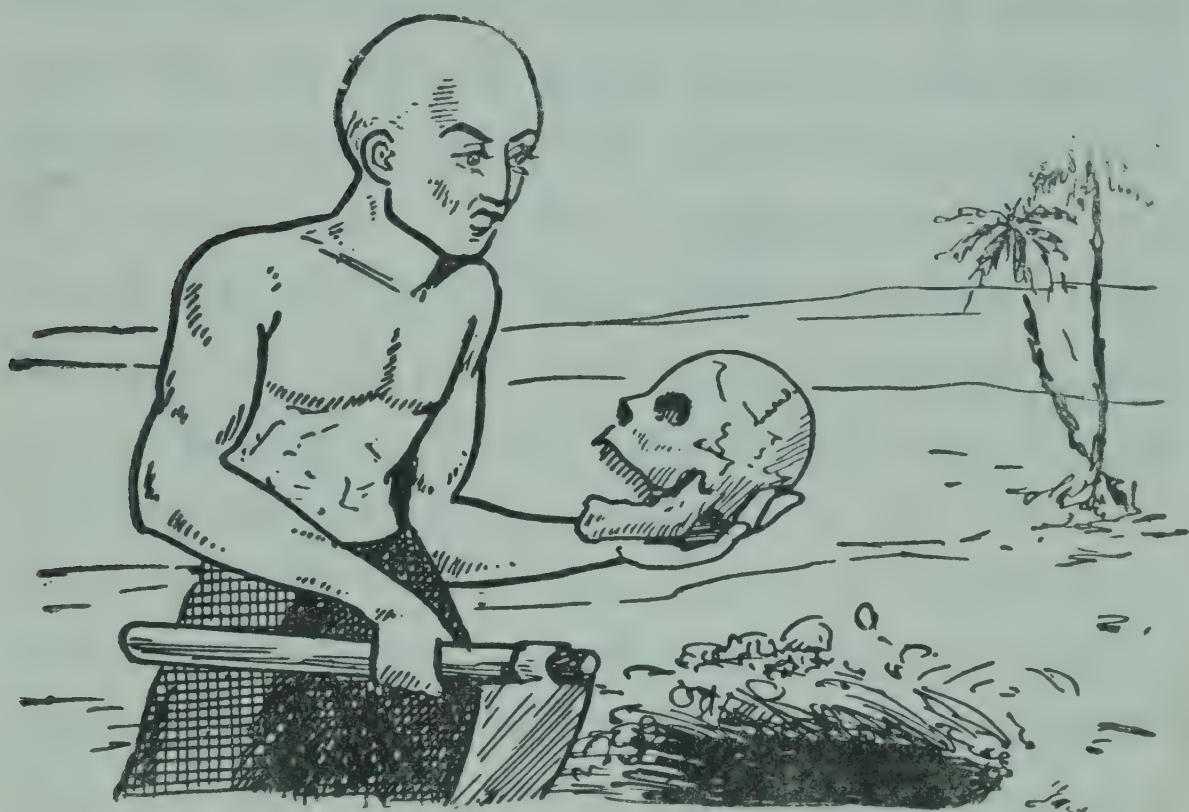
बे-जीभ का मुखड़ा बहुत-सी भेद की बातें बता रहा था।

यही हालत होनी है।"

पहलवान पर इसका बहुत अच्छा असर पड़ा। अपनी बुरी हालत का खयाल उसके दिल से निकल गया। उसने अपने दिल से कहा—

"रंज का बोझ उठाना मायूस होने से अच्छा है। जिंदगी किसीके सिर पर बोझ हो या ताज हो, लेकिन मरने के बाद दोनों की कुछ भी हस्ती बाकी नहीं रहती। न सुख रहता है न दुःख, दुनिया में बाकी रहते हैं तो बस अच्छा काम और नेकी।"

२४

एक मरतबा की बात है। एक हफ्ते तक कोई मुसाफिर हजरत खलील के मुसाफिरखाने में नहीं आया। हजरत खलील की यह आदत थी कि हर दिन बिना किसी मेहमान को खाना खिलाये वह खुद खाना न खाते थे। आखिर आप बाहर निकले और चारों तरफ देखने लगे। एक दुबला-पतला बूढ़ा आदमी दिखाई पड़ा। उन्होंने उसके साथ तसल्ली की बातें की और कहा कि जो कुछ साग-रोटी मौजूद है, आइये खा लीजिये।

वह बूढ़ा 'अच्छा' कहकर उनके साथ चला आया। मुसाफिरखाने के लोगों ने उस मामूली हैसियत के बूढ़े को बड़ी इज्जत के साथ बैठाया और नौकरों को हुक्म दिया कि खाना लाओ। सब लोग बैठ गये। सबने खाना शुरू किया पर बूढ़े के मुंह से खुदा की याद में एक बात तक न निकली।

हजरत खलील ने अचरज से कहा, "बड़े मियां, यह क्या बात है ? खाने के वक्त आपने खुदा का नाम तक न लिया जैसेकि मामूली तौर पर बूढ़ों की आदत होती है।"

बूढ़ा बोला, "मैं ऐसा नहीं करता, क्योंकि मैंने अपने आग पूजनेवाले गुरू से यह बात नहीं सीखी।"

हजरत खलील यह सुनकर बहुत दुखी हुए। उन्होंने बूढ़े की बेइज्जती की और वहां से निकाल दिया।

खुदा के यहां से आवाज आई, "खलील ! मैंने इस बूढ़े को सौ बरस खाना और जिंदगी दी और तू जरा-

सी देर भी उसको न निभा सका। माना कि वह आग की पूजा करता है, लेकिन तू अपने दान और दया का हाथ क्यों पीछे खींच लेता है ?"

: ३ :

सीख की बातें

तीन चीजों के बिना तीन चीजें कायम नहीं रहतीं— व्यापार के बिना दौलत, बहस-मुबाहिसे के बिना इल्म और अच्छी हुकूमत के बिना राज्य।

× × ×

अपने सब छिपे हुए भेद अपने दोस्तों से मत कहो। मुमकिन है, वह कभी तुम्हारा दुश्मन हो जाय।

× × ×

जो कुछ बुराई तुम कर सकते हो, वह सब अपने दुश्मनों के साथ मत करो। मुमकिन है, वह कभी तुम्हारा दोस्त हो जाय।

× × ×

जिस राज़ को तुम छिपाना चाहते हो, उसे किसी-से न कहो, अपने सच्चे दोस्त से भी नहीं, क्योंकि उस दोस्त के भी और दोस्त होंगे।

× × ×

अगर तुम दीवार के नजदीक भी कुछ बोलो, तो भी सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि दीवार के पीछे कान लगाये कोई सुनता हो।

× × ×

जो इंसान ताकतवर होकर कमजोर की मदद नहीं करता, वह कमजोर होने पर दुःख उठाता है।

× × ×

जिसने पढ़ा-लिखा, पर उसके मुताबिक अमल नहीं किया, वह आदमी उस मूर्ख के मानिंद है, जो हल चलाता है, पर बीज नहीं बोता।

× × ×

शेर से पंजा लड़ाना और तलवार को घूंसा मारना अक्लमंदों क़ा काम नहीं है।

× × ×

अगर रत्न कीचड़ में गिर पड़े तो भी अनमोल ही है।

× × ×

कस्तूरी वह जो खुद खुशबू दे। कस्तूरी वह नहीं है, जिसे अत्तार बताये।

× × ×

मूर्ख, नट के ढोल की तरह खूब शोर करता है; लेकिन भीतर से खाली होता है।

× × ×

थोड़ा-थोड़ा करके बहुत हो जाता है। बूंद-बूंद करके नदी भर जाती है। नदी मिलकर समुद्र हो जाता है।

× × ×

जो आदमी दौलत और ताकत रखते हुए भी दुखियों की परवाह नहीं करता, उससे कहदो कि उस

दुनिया में उसे कुछ भी दौलत या इज्जत नहीं मिलेगी।

× × ×

मैंने देखा कि एक मूर्ख और नीच आदमी एक बड़े आदमी को गाली दे रहा है। मैंने कहा, "अरे भले आदमी अगर तू अभागा है, तो इसमें भाग्यवानों का क्या क़सूर है ?"

× × ×

जो आदमी इस मक़सद से दूसरों की बात काटता है कि लोग उसे आलिम समझें, वह सिर्फ अपनी मूर्खता साबित करता है।

× × ×

जबतक सवाल नहीं पूछा जाता, चतुर आदमी जवाब नहीं देता। बातूनी आदमी चाहे सच भी कहे, पर लोग उसके दावे को झूठा ही समझेंगे।

× × ×

जो आदमी हमेशा सच बोलता है, उसके एक मरतबा झूठ बोलने पर ध्यान नहीं दिया जाता। लेकिन अगर कोई आदमी झूठ बोलने में मशहूर हो जाय, तो उसके सच बोलने पर भी लोग उसका यकीन नहीं करेंगे।

× × ×

जिस आनन्द के पीछे शोक होता है, उस आनंद की बनिस्बत वह शोक अच्छा है, जिसके पीछे आनंद होता है।

× × ×

सब लोगों के दांत तो खटाई खाने से बिगड़ते हैं, लेकिन इंसाफ करनेवाले हाकिम के दांत मिठाई से बिगड़ते हैं।

जो हाकिम पांच ककड़ियों की रिश्वत लेता है वह खरबूजे के सौ खेतों पर तुम्हारा हक साबित कर देगा।

× × ×

दूसरे से नये कपड़े मांगने की बनिस्बत अपने पुराने कपड़े को ठीक करा लेना अच्छा है।

× × ×

अगर आदमी बुराइयों से बचा रहे तो कोई उसका बाल बांका नहीं कर सकता। धोबी मैले कपड़ों को ही पाट पर पटकता है।

× × ×

चीटियां आपस में मेल करके सिंह की भी खाल उधेड़ सकती हैं।

× × ×

जिसका बहीखाता साफ है, उसे हिसाब जांचने-वाले का क्या डर है।

× × ×

खुदा किसीको भूखों नहीं मारना चाहता। फिर भी उद्यम करना चतुर आदमी का फर्ज है।

× × ×

दूसरों से जलनेवाले आदमी को सताना बेकार है। वह खुद ही डाह की आग में जला करता है।

१ बद्रीनाथ
२ जंगल की सैर
३ भीष्म पितामह
४ शिवि और दधीचि
५ विनोबा और भूदान
६ कबीर के बोल
७ गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८ गंगाजी
९ गौतम बुद्ध
१० गांव सुखी, हम सुखी
११ निषाद और शबरी
१२ कितनी जमीन ?
१३ ऐसे थे सरदार
१४ चैतन्य महाप्रभु
१५ कहावतों की कहानियां
१६ सरल व्यायाम
१७ द्वारका
१८ बापू की बातें
१९ बाहुबली और नेमिनाथ
२० तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१ बीमारी कैसे दूर करें ?
२२ माटी को मूरत जागी
२३ गिरिधर की कुंडलियां
२४ रहीम के दोहे
२५ गीता प्रवेशिका
२६ तुलसी-मानस-मोती
२७ दादू की वाणी
२८ नजीर की नज्मे
२९ संत तुकाराम
३० हजरत उमर
३१ बाजीप्रभु देशपांडे
३२ तिरुवल्लुवर
३३ कस्तूरबा गांधी
३४ शहद की खेती
३५ कावेरी
३६ तीर्थराज प्रयाग
३७ तेल की कहानी
३८ हम सुखी कैसे रहें ?
३९ गो-सेवा क्यों ?
४० कैलास-मानसरोवर
४१ अच्छा किया या बुरा ?
४२ नरसी मेहता
४३ पंढरपुर
४४ ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५ संत ज्ञानेश्वर
४६ धरती की कहानी
४७ राजा भोज
४८ ईश्वर का मंदिर
४९ गांधीजी का संसार-प्रवेश
५० ये थे नेताजी
५१ रामेश्वरम
५२ कुत्तों का मिलाप
५३ रामकृष्ण परमहंस
५४ समर्थ रामदास
५५ मीरा के पद
५६ मिल-जुलकर काम करो
५७ काला पानी
५८ पावभर आटा
५९ सवेरे की रोशनी
६० भगवान के प्यारे
६१ हारुं-अल-रशीद
६२ तीर्थंकर महावीर
६३ हमारे पड़ोसी
६४ आकाश की बातें
६५ सच्चा तीरथ
६६ हाजिर जवाबी
६७ सिंहासन बत्तीसी भाग १
६८ सिंहासन बत्तीसी भाग २
६९ नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७० मूरखराज
७१ नाना फड़नवीस
७२ गुरु नानक
७३ हमारा संविधान
७४ राजेन्द्र बाबू का बचपन
७५ परमहंस की कहानियां
७६ सोने का कंगन
७७ झांसी की रानी
७८ हुआ सवेरा
७९ बीरबल की बातें
८० मन के जीते जीत
८१ मुरब्बी
८२ हरिद्वार
८३ सागर की सैर
८४ आसमान के रखवाले
८५ महामना मालवीय
८६ भर्तृहरि
८७ देवताओं का प्यारा
८८ देश यों आगे बढ़ेगा
८९ हमारे मुस्लिम सन्त